



## सुखी राजकुमार

मानव-सभ्यता के विकास-क्रम में मनुष्य ने अपने लिए सुख-सुविधाओं का विस्तार किया और समाज में रहना भी सीखा। बुद्धि के विकास ने सिर्फ उसके लिए सुख की ही सृष्टि नहीं की, वरन् उसकी भावनात्मक दुनिया को भी प्रभावित किया, उसे अन्य प्राणि-जगत से अधिक संवेदनशील बनाया। सभ्यता और समाज के विकास के साथ यह संवेदनशीलता दूसरों के सुख में सुखी और दूसरों के दुख में दुखी होने की क्षमता में विकसित होती गई और मनुष्यता के सर्वोच्च गुणों में गिनी जाने लगी।

अपने लिए जीने और दूसरों के लिए सोचने-करने की इन प्रवृत्तियों के बीच के द्वंद्व से मनुष्य-समाज लगातार घिरा रहता है। इन्हीं प्रवृत्तियों का सुंदर चित्रण करने वाली है अंग्रेजी लेखक ऑस्कर वाइल्ड की यह कहानी—सुखी राजकुमार।



### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- मानव-मन पर सीमित और व्यापक अनुभव के प्रभाव का अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- अपरिचय और परिचय की स्थितियों में मानव-व्यवहार की तुलना कर सकेंगे;
- अच्छी संगत से सद्गुणों का विकास होता है, इस विचार पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों की तुलना कर सकेंगे;
- राजनीतिक प्रतिनिधियों की स्वार्थपरता और असंवेदनशीलता का उल्लेख कर सकेंगे;
- रूप और कर्म के सौंदर्य पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकेंगे;
- कहानी के मार्मिक स्थलों की सराहना और कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।



टिप्पणी

सुखी राजकुमार



### 13.1 मूल पाठ

आइए, अब हम ऑस्कर वाइल्ड की कहानी 'सुखी राजकुमार' का ध्यानपूर्वक पाठ करें और उसका आनंद लें। आपकी सुविधा के लिए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

### सुखी राजकुमार

नगर में उत्तर की ओर एक ऊँचे से स्तंभ पर सुखी राजकुमार की प्रतिमा स्थापित थी। मूर्ति पर हल्का स्वर्ण-पत्र मढ़ा था, आँखों के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा-सा लाल जड़ा था।

लोग उस प्रतिमा के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे।

दिन भर उड़ने के बाद एक गौरेया रात को नगर के समीप पहुँची।

“मैं ठहरूँ कहाँ?” उसने सोचा, “मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा!”

इतने में उसने स्तंभासीन मूर्ति देखी।

“आहा! मैं यहीं ठहरूँगी! यह बहुत अच्छा स्थान है। यहाँ काफी साफ़ हवा आ रही है।”

और वह मूर्ति के पैरों के पास उतर पड़ी।

उसने चारों ओर देखकर कहा-  
“मेरा शयनागार सोने का है”  
और वह पंखों में मुँह छिपाकर सोने जा रही थी कि एक पानी की बड़ी-सी बूँद टप से उस पर गिर पड़ी।

“ताज्जुब है,” उसने कहा,  
“आकाश में एक भी बादल नहीं है- तारे साफ़ चमक रहे हैं- फिर भी पानी बरस रहा है!”

इतने में दूसरी बूँद गिरी।



चित्र 13.1

#### शब्दार्थ

स्तंभ- खंभा

प्रतिमा- मूर्ति

स्वर्ण-पत्र- सोने के पत्र

नीलम- नीले रंग का कीमती पत्थर

लाल- लाल रंग का कीमती पत्थर

स्तंभासीन- खंभे पर आसीन

शयनागार- सोने का स्थान (कक्ष)

ताज्जुब- आश्चर्य



टिप्पणी

इस प्रतिमा से फायदा क्या, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती,” उसने कहा, “चलो कोई दूसरा आश्रय-स्थान ढूँढ़ें।”

उसने पंख खोले और तीसरी बूँद गिर पड़ी।

उसने ऊपर देखा। राजकुमार की आँखें डबडबा रही थीं और उसके सुनहले गाल पर आँसू टुलक रहे थे। उसका चेहरा इतना भोला था कि गौरैया को दया आ गई।

“तुम कौन हो?” उसने पूछा।

“मैं सुखी राजकुमार हूँ।”

“फिर तुम रो क्यों रहे हो?” पंख फड़फड़ाकर गौरैया ने कहा, “तुमने तो मुझे बिलकुल भिगो दिया है!”

“जब मैं जीवित था”- मूर्ति ने उत्तर दिया- “और मेरे वक्ष में मनुष्य का हृदय धड़कता था, तब मेरा आँसुओं से परिचय नहीं हुआ था। मैं आनंद-महल में रहता था, जहाँ दुख को प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी। दिन में मैं अपने उद्यान में विलास करता था और रात को नृत्य में लगा रहता था। मेरे उद्यान के चारों ओर एक प्राचीर थी, किंतु मेरे चारों ओर इतना सौंदर्य था कि मैंने कभी बाहर देखने का प्रयत्न नहीं किया। मैं जीता रहा और मर गया। आज जब मैं मर गया हूँ, तो उन्होंने मुझे इतने ऊँचे पर स्थापित कर दिया है कि मैं संसार की सारी कुरूपता और दुख-दर्द देख सकता हूँ। मेरे ही नगर में इतना दुख है कि यद्यपि मेरा हृदय जस्ते का है, मगर फिर भी फटा जा रहा है।”

“अच्छा, तो राजकुमार ठोस सोने का नहीं है!” गौरैया ने सोचा, मगर वह इतनी शिष्ट थी कि उसने यह बात जोर से नहीं कही।

“दूर, बहुत दूर”, मूर्ति अपनी सुनहली आवाज़ में कहती रही, “एक गंदी-सी गली में टूटा-फूटा मकान है, उसकी एक खिड़की खुली है.... उसके अंदर एक चौकी पर एक स्त्री बैठी है। उसका चेहरा दुबला और थका हुआ है और उसके हाथ सुई के घावों से क्षत-विक्षत हैं। वह रानी की सर्वसुंदरी अंगरक्षिका के नृत्य-वसन पर फूल काढ़ रही है। एक कोने में उसका बच्चा बीमार पड़ा है। उसे ज्वर है और वह फल माँग रहा है। गौरैया, नन्हीं गौरैया, क्या तुम मेरी तलवार की मूठ में जगमगाता हुआ लाल निकालकर उसे नहीं दे आओगी... मेरे पैर तो इस स्तंभ में जड़े हैं और मैं चल नहीं सकता।”

“दक्षिण देश में लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे नील नदी पर उड़ रहे होंगे और कमल के फूलों से वार्तालाप करने के बाद राजाओं के मकबरों में सोते होंगे। राजा रंगीन ताबूत में सो रहा होगा। वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग-लेपन किया गया होगा। उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे।” गौरैया ने कहा।

डबडबाना- आँखों में आँसू उमड़ आना

सुनहले- सोने की आभा वाले

वक्ष-छाती, सीना

इजाजत- अनुमति

उद्यान- बाग, उपवन

विलास- क्रीड़ा, सुख का उपभोग, आनंद करना

प्राचीर-परकोटा, दीवार

यद्यपि- हालाँकि

जस्ता- खाकी रंग की एक धातु, जिसमें ताँबा मिलाकर पीतल बनता है

क्षत-विक्षत- लहलुहान, घायल

सर्व सुंदरी- सबसे अधिक सुंदर स्त्री

अंगरक्षिका- शरीर की रक्षा के लिए नियुक्त स्त्री, बॉडीगार्ड

नृत्य-वसन- नाचते समय पहने जाने वाली पोशाक

ज्वर-बुखार

नील नदी- पश्चिम एशिया की एक नदी, जो दुनिया में सबसे बड़ी है

मकबरा- महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों (प्रायः राजाओं) के दफनाए जाने के स्थान पर बनी इमारत

ताबूत- शव को रखने वाला बक्स

अंग-लेपन- शरीर पर मलना

पुखराज- सुनहरे (पीले) रंग का कीमती पत्थर



## टिप्पणी

वसंत- सारी ऋतुओं में वातावरण की दृष्टि से सबसे उपयुक्त (प्रियकर) ऋतु,

श्वेत-सफेद, संगमरमर- एक प्रकार का अत्यधिक चिकना पत्थर

प्रासाद-महल

छज्जा- बालकनी

भावोन्मेष- भाव का उदय (यहाँ भाव के आवेग में)

शिखर- सबसे ऊँचा हिस्सा

आकाशदीप- बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन

मिस्र- उत्तर-पूर्वी अफ्रीका का एक देश, जिसकी गिनती विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में होती है

गिरजाघर- ईसाई धर्म का प्रार्थना-स्थल

## सुखी राजकुमार

“गौरैया! गौरैया! सिर्फ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है- उदास भी है!”

“उँह! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है!” गौरैया ने कहा, “पिछले वसंत में दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज़ उड़ती हूँ, किंतु यह बड़ी ही अपमानजनक बात है।”

मगर, राजकुमार इतना उदास था कि गौरैया को दया आ गई।

“यहाँ बहुत सर्दी पड़ने लगी, लेकिन कोई बात नहीं, मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी।”

“धन्यवाद, नन्हीं गौरैया!” राजकुमार ने कहा।

गौरैया ने राजकुमार की तलवार की मूठ से लाल निकाला और उसे अपनी चोंच में दबाकर उड़ चली। उड़ते वक्त वह गिरजाघर के शिखर के पास से गुज़री, जहाँ श्वेत संगमरमर से देवदूतों की मूर्तियाँ बनी थीं। वह उच्च प्रासाद के समीप से गुज़री और उसने नाच की आवाज़ सुनी। छज्जे पर एक सुंदर किशोरी अपने प्रेमी के कंधे पर हाथ रखे हुए आई।

“आह! तारे कितने सुंदर हैं, प्रेम की शक्ति भी कितनी अद्भुत है,” उसने भावोन्मेष में कहा, “मैं समझती हूँ कि अगले नृत्य के लिए मेरे वस्त्र तैयार हो जाएँगे। मैंने उन पर फूल कढ़वाने की आज्ञा दी है। मगर ये लोग देर कितनी लगाते हैं!”

वह नदी पर से गुज़री और जहाज़ के शिखरों पर लटकते हुए आकाशदीप देखे। अंत में वह उस टूटे-फूटे मकान के समीप पहुँची और भीतर झाँका। बच्चा बुखार के कारण बिस्तर पर तड़प रहा

था। वह फुदककर भीतर पहुँची और उसने उस स्त्री के पास की मेज़ पर लाल रख दिया। माँ थककर सो गई थी। वह बच्चे के सिरहाने उड़कर पंखों से हवा करने लगी।

“आह, कैसा अच्छा लग रहा है!” बच्चे ने कहा, “अब शायद मैं अच्छा हो रहा हूँ!” और वह सो गया।



चित्र 13.2



टिप्पणी

गौरैया उड़कर राजकुमार के पास वापस आ गई और उसने उसे सब हाल बताकर कहा-  
“आश्चर्य है, यद्यपि इतनी ठंडक है, लेकिन मुझे ज़रा भी ठंड नहीं लग रही है!”

“इसलिए कि तुमने आज एक भलाई की है,” राजकुमार ने कहा।

गौरैया सोचने लगी और सो गई। सोचने में उसे सदा झपकी आ जाती थी।

जब दिन उगा, तो वह नदी में गई और नहाई।

“अच्छा, आज रात को मैं मिस्र देश जाऊँगी!” उसने सोचा। वह आज उमंग से भरी थी। उसने शहर की सभी इमारतें घूम डालीं और वह गिरजाघर के शिखर पर बहुत देर तक बैठी रही।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमार के पास गई और बोली- “तुम्हें मिस्र में किसी से कुछ कहलाना तो नहीं है- मैं अभी-अभी जाने के लिए तैयार हूँ।”

“गौरैया! गौरैया! नन्ही गौरैया! क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं,” मूर्ति ने कहा, “शहर में, दूर एक सीली हुई कोठरी में मुझे एक तरुण कलाकार दीख रहा है। वह अपनी कागजों से लदी मेज़ पर झुका है और उसके बगल में एक पात्र में सूखे हुए फूल लगे हैं। उसके बाल भूरे और सुनहले हैं, उसके होंठ अनार के फूल की तरह लाल हैं, उसकी आँखें बड़ी सपनीली हैं, वह रंगमंच के लिए नया नाटक लिख रहा है, मगर ठंड के कारण उसकी अँगुलियाँ नहीं चल रही हैं। अँगूठी में एक भी कोयला नहीं है और भूख से उसकी आँखों के सपने टूट रहे हैं।”

“मिस्र में सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कल मेरे सब साथी दूसरे प्रपात तक उड़ जाएँगे, जहाँ नरकुल की झाड़ियों में दरियाई घोड़े सोते हैं और संगमूसा की शिला पर मेम्नान का देवता बैठा है। रात भर वह तारों की ओर देखता है। भोर का तारा जब डूबने लगता है, तो वह खुशी से चीख पड़ता है और फिर चुप हो जाता है। दोपहर के समय वहाँ शेर आते हैं, जिनकी आँखें हरे रत्नों की तरह चमकती हैं और जिनकी गरज में प्रपात का स्वर डूब जाता है।”

**मेम्नान-** ग्रीक मिथक में इथोपिया का राजा। ट्रोजन राज परिवार के टिथोनस और इओस (उषा) का पुत्र। अपने चाचा प्रियम (Priam) की ओर से ग्रीक के विरुद्ध बहादुरी से लड़ा और एथाइलस के हाथों मारा गया। इओस के आँसुओं को देखकर ज्यूस ने उसे अमरत्व प्रदान किया। उसके साथी, जो पक्षियों में बदल गये, प्रतिवर्ष उसकी समाधि पर लड़ने और विलाप करने के लिए आते थे। मिस्र में उसका नाम थेबे के निकट अमेनहोतेप तृतीय की पत्थर की विशाल मूर्तियों के साथ जुड़ा है। उषाकालीन सूर्यकिरणें जब इन मूर्तियों का स्पर्श करती हैं, तो इनसे वीणा की झंकार सी ध्वनि निकलती है- इस ध्वनि के बारे में ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह अपनी माँ की शुभकामनाओं के प्रति मेम्नान का प्रत्युत्तर है।

“लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?”

सीली- सीलन भरी

तरुण- नौजवान

पात्र- जिसमें कुछ रखा जा सके (बर्तन, गमला फूलदान वगैरह)

सपनीली- सपने देखने वाली (आँखें)

रंगमंच- नाटक खेलने का स्थान

प्रपात- झरना

नरकुल- पतली लंबी पत्तियों तथा पतले गाँठदार डँठल वाला एक पौधा, जो कलम, चटाई आदि बनाने के काम आता है

संगमूसा- एक तरह का काला पत्थर

भोर- सुबह

गरज-गर्जना



## टिप्पणी

ईंधन- ऊर्जा प्राप्त करने के लिए जलाया जाने वाला पदार्थ (कोयला, लकड़ी, डीजल, पेट्रोल आदि)

आँकना- मूल्य निर्धारित करना/तय करना

बंदरगाह- पानी के जहाजों के आगमन और प्रस्थान का स्थान

मस्तूल- जहाज के बीच में गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा, जिसमें पाल बाँधा जाता है

कुंज- लताओं आदि से घिरा या ढँका हुआ स्थान

सौदा- खरीदे-बेचे जाने वाला सामान

## सुखी राजकुमार

“अच्छा! आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ?” गौरैया ने पूछा।

“अफ़सोस! मेरे पास अब कोई दूसरा लाल नहीं है। मेरे पास मेरी आँखें हैं, जो नीलम से बनी हैं, जो हजारों वर्ष पहले भारत से लाए गये थे। एक निकालकर उसे दे आओ। वह उसे बेचकर ईंधन और खाना खरीद लेगा।”

“प्यारे राजकुमार”, गौरैया ने सिसकते हुए कहा, “यह तो मुझसे नहीं होगा और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

“गौरैया! प्यारी गौरैया!” राजकुमार बोला, “तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए।”

गौरैया ने उसकी आँख का नीलम निकाल लिया और कोठरी की ओर उड़ चली। एक छेद से वह अंदर घुस गई। कलाकार सिर झुकाए बैठा था, अतः उसने उसके पंखों की आवाज़ नहीं सुनी। जब उसने सिर उठाया, तो देखा कि मुर्झाए हुए फूलों पर बड़ा-सा नीलम रखा था।

“ओह, मालूम होता है, मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर लूँगा।”

गौरैया बंदरगाह की ओर जाकर एक जहाज के मस्तूल पर बैठ गई। वहाँ कुछ मजदूर अपने सीने पर रस्सियाँ बाँधे नाँवें खींच रहे थे।

जब चाँद उगा, तो वह राजकुमार के पास आकर बोली- “मैं तुमसे विदा माँगने आई हूँ!”

“गौरैया, प्यारी गौरैया! क्या आज रात को और नहीं ठहरोगी?”

“देखो, अब जाड़ा पड़ने लगा है। मिस्त्र में हरे-भरे खजूर के कुंजों पर गर्म धूप छाई होगी। मेरे साथी एक पुराने मंदिर में घोंसला बना रहे होंगे। प्यारे राजकुमार, मैं जा रही हूँ, मगर मैं तुम्हें भूल नहीं सकती। अगले वसंत में जब मैं लौटूँगी, तो तुम्हारे लिए एक लाल और एक नीलम लेती आऊँगी।”

“नीचे गली में”, राजकुमार ने कहा, “एक लड़की खड़ी है। उसका सौदा नाली में गिर गया है और वह रो रही है। यदि वह खाली हाथ घर जाएगी, तो उसका पिता उसे मारेगा। उसके पैरों में जूता नहीं है, उसका सिर नंगा है। मेरी दूसरी आँख निकालकर उसे दे दो, तो वह मार से बच जाएगी।”

“कहो तो मैं आज रात भर और रुक जाऊँ, मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिलकुल ही अंधे हो जाओगे!”

“गौरैया! प्यारी गौरैया!” राजकुमार ने कहा- “मैं जो कुछ कहता हूँ, उसे करो।”

उसने उसकी आँख निकाल ली और रोती हुई लड़की के हाथ में वह नीलम रख दिया। “वाह कैसा रंगीन काँच है!” लड़की ने कहा और हँसकर घर की ओर भागी।





टिप्पणी

गौरैया वापस आई।

“अब तुम अंधे हो”, उसने कहा, “इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।”

“नहीं-नहीं, गौरैया, अब तुम मित्र देश को जाओ।”

“मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी,” गौरैया ने कहा और उसके पैरों पर सिर रखकर सो गई।

अगले दिन वह राजकुमार के कंधों पर बैठकर भाँति-भाँति की कहानियाँ सुनाने लगी— लाल बगुलों की कहानी, जो नील नदी के किनारे कतार में खड़े रहते हैं और मौका पाते ही झपटकर सुनहली मछलियाँ चोंच में दबाकर उड़ जाते हैं; स्फिन्क्स की मूर्ति की कहानी, जो रेगिस्तान में रहती है और सर्वज्ञ है; चंद्रमा की घाटियों के राजा की कहानी, जो बड़े-से संगमरमर की पूजा करता है और उस हरे साँप की कहानी, जो डालियों में लिपटा रहता है और बीस पुरोहित उसे दूध पिलाते हैं।

“प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताई, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है— मनुष्य का दुख-दर्द, दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं! जाओ, मेरे नगर को देखकर बताओ कि वहाँ क्या हो रहा है?”

गौरैया शहर पर उड़ने लगी। अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं— “भागो यहाँ से!” चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।

वह वापस आ गई और उसने राजकुमार को यह सब हाल बताया।

“मैं सोने से मढ़ा हूँ”, राजकुमार बोला, “इसमें से स्वर्ण-पत्र निकालकर मेरी निर्धन प्रजा में बाँट दो।”

गौरैया एक के बाद एक स्वर्ण-पत्र निकालकर बाँटती रही। अंत में राजकुमार बिल्कुल मटमैला और मनहूस दीखने लगा, लेकिन बच्चों के चेहरे पर गुलाबी किरणें झलक आईं

कतार-पंक्ति, लाइन

पुरोहित- पूजा-अर्चना कराने वाला व्यक्ति

रंगरलियाँ-मजे के लिए किए जाने वाले क्रियाकलाप

ज़र्द-पीला

मटमैला- मिट्टी के रंग का (यहाँ भद्दा)

मनहूस- उदासी भरा, अशुभ



चित्र 13.3



## टिप्पणी

पाला- हिम, तुषार, बर्फ़

फ़र- रोएँ, रोएँदार खाल

मेयर- नगर-प्रमुख

भट्ठी- बड़ा चूल्हा या अँगीठी

कॉरपोरेशन- निगम

देवदूत- फ़रिश्ता

मूल्यवान- कीमती

विहार करना- आनंद के लिए सैर करना,

क्रीड़ा करना

## सुखी राजकुमार

और वे गलियों में खेलने लगे।

उसके बाद ओले गिरे और फिर पाला पड़ने लगा। सड़कें चमकदार बर्फ़ से ढँककर चाँदी की मालूम होने लगीं। छज्जों से बड़े-बड़े बर्फ़ के टुकड़े लटकने लगे। सभी फ़र के ओवरकोट पहनकर निकलने लगे।

बेचारी नहीं गौरैया ठंड से अकड़ने लगी; लेकिन वह उसे इतना प्यार करती थी कि उसे वह छोड़ नहीं सकती थी। अंत में उसे लगा कि अब उसके दिन करीब है। अब उसके पंरों में केवल इतनी शक्ति शेष थी कि वह राजकुमार के कंधों तक एक बार उड़ सकती थी।

“अलविदा राजकुमार!” वह बोली, “क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने दोगे?”

“ओहो!” बड़ी खुशी हुई सुनकर कि आखिर तुम अब मिस्त्र देश जाने के लिए तैयार हो।”

“मिस्त्र नहीं, मैं मृत्यु के देश जाने की तैयारी कर रही हूँ।”

और उसने राजकुमार को चूमा और मरकर उसके पैरों के पास गिर पड़ी।

इसी समय मूर्ति के अंदर से कुछ आवाज़ हुई, जैसे कुछ टूट गया हो। वास्तव में, मूर्ति के अंदर का जस्ते का दिल चटख गया था। इस समय पाला गजब का था।

दूसरे दिन मेयर अन्य सदस्यों के साथ टहल रहा था। जब वे वहाँ से गुज़रे, तो मेयर ने उसकी ओर देखा और कहा- “कितनी भद्दी लग रही है यह प्रतिमा!”

“हाँ, कितनी भद्दी है,” सदस्यों ने कहा, जो हमेशा मेयर की हाँ-में-हाँ मिलाते थे।

“उसकी तलवार से लाल गिर गया है, उसकी आँखें गायब हैं और उसका सोना उतर गया है। यह तो बिल्कुल पत्थर का भिखारी मालूम देता है!”

“बिल्कुल! बिल्कुल पत्थर का भिखारी!” सदस्यों ने कहा।

“लो, उसके पैर पर एक चिड़िया भी मरी पड़ी है,” मेयर ने कहा, “कल घोषणा करवा दो कि यहाँ चिड़ियाँ न मरने पाएँ।”

सदस्यों ने फ़ौरन नोट कर लिया। और, उसके बाद उन्होंने मूर्ति हटा ली।

“चूँकि अब वह सुंदर नहीं, अतः उसका कोई उपयोग नहीं है,” नगर के एक सुप्रसिद्ध कलाविज्ञ ने कहा।

उसके बाद उन्होंने मूर्ति भट्ठी में गलाई और कॉरपोरेशन की बैठक में यह प्रश्न उठा कि इसका क्या किया जाए!





“यहाँ पर एक दूसरी मूर्ति होनी चाहिए,” मेयर ने कहा, “मैं समझता हूँ, मेरी मूर्ति ठीक रहेगी।”

“नहीं, मैं समझता हूँ मेरी!” हरेक सदस्य ने कहा, और वे बराबर झगड़ते रहे।

लोहा गलाने के कारखाने में मिस्त्री ने कहा- “कैसा अचरज है, यह टूटा हुआ जस्ते का दिल भट्टी में पिघल ही नहीं रहा है।”

उसने एक कूड़ेखाने में उसे फेंक दिया। वहीं गौरैया की लाश भी पड़ी थी।

ईश्वर ने अपने देवदूत से कहा- “मेरे लिए नगर की दो सबसे मूल्यवान वस्तुएँ ले आओ।”

देवदूत वह जस्ते का दिल और गौरैया की लाश ले आया।

“ठीक, बिलकुल ठीक!” ईश्वर ने कहा- “मेरे स्वर्ग की डालों पर यह गौरैया सदा चहकेगी और मेरे उपवन में राजकुमार सदा विहार करेगा।”



## 13.2 आइए समझें

आप इस पुस्तक में दो और कहानियाँ पढ़ रहे हैं। कहानी को समझने के आधारभूत तत्वों से आप परिचित हैं। आइए, अब हम इस कहानी को समझने का प्रयास करें।

### 13.2.1 कथावस्तु

यह कहानी अन्य दोनों कहानियों- ‘बहादुर’ और ‘शतरंज के खिलाड़ी’ से आकार में छोटी है। इसे पढ़ने में आपको 20 से 25 मिनट का समय लगा होगा। इस तौर पर यह कहानी कथानक के लिए आदर्श माने जाने वाली समय-सीमा का निर्वाह करती है। कथानक भी बहुत संक्षिप्त है।

‘शतरंज के खिलाड़ी’ कहानी में प्रेमचंद ने शुरू में एक ‘भूमिका’ द्वारा अपनी बात की प्रस्तावना की है। यहाँ ऑस्कर वाइल्ड ने कहानी के आखिर में अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जैसे ‘उपसंहार’ प्रस्तुत किया है। नगर के मेयर और उसके साथियों के माध्यम से उन्होंने व्यवस्था के कर्णधारों की असंवेदनशीलता और स्वार्थपरता को उजागर किया है, जो अपनी-अपनी मूर्ति स्थापित करवाने के फेर में प्रतिमा को गलवाने और गौरैया की लाश को कूड़े में फिंकवाने का आदेश देते हैं। निर्धन और दुखी जनता के दर्द से हर क्षण पिघलते रहने वाला ‘सुखी राजकुमार’ का जस्ते का दिल भट्टी की तेज़ आग में भी नहीं पिघलता। ईश्वर के आदेश पर उसके देवदूत नगर की सबसे मूल्यवान वस्तुओं के रूप में राजकुमार के दिल और गौरैया के शव को ले जाते हैं। ईश्वर इन दोनों से बहुत प्रसन्न है और राजकुमार व गौरैया को अपना आशीर्वाद प्रदान करता है।



टिप्पणी

### सुखी राजकुमार

आइए देखें कि इस कहानी की कथावस्तु क्या है? यानी लेखक हमसे क्या कहना चाहता है? क्या बाँटना चाहता है? वह हमारे समाने किन बिंदुओं को उद्घाटित करना चाहता है?

सबसे पहले लेखक हमें बताता है कि नगर में एक सुखी राजकुमार की प्रतिमा थी। यह प्रतिमा सोने से मढ़ी थी तथा इसमें नीलम और लाल जड़े थे। लोग इसके सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे। तीन वाक्यों में यह वर्णन है, जिससे संकेत मिलता है कि प्रतिमा के सौंदर्य की चर्चा का आधार संभवतः सोना, नीलम और लाल थे। अंत में इसकी पुष्टि भी होती है, जब इन चीजों के न रहने पर मेयर, सभासद और सुप्रसिद्ध कलाविज्ञ उस प्रतिमा की निंदा करते हैं। यानी, लेखक कहना चाहता है कि लोग सौंदर्य की तलाश प्रायः उसकी कीमत और उसके वैभव से करते हैं।

इसी क्रम में एक गौरैया का भी जिक्र आता है, जो उस नगर के ऊपर से उड़कर मिस्र देश की ओर जा रही है, लेकिन रात्रि हो जाने के कारण आश्रय की तलाश में उस मूर्ति तक पहुँच जाती है।

लेखक हमें बताता है कि यह प्रतिमा वास्तव में एक सुखी राजकुमार की थी। एक ऐसे राजकुमार की, जो आनंद-महल में रहता था और जिसका कभी भी दुख से सामना नहीं हुआ था, क्योंकि उसके चारों ओर केवल ऐश्वर्य और वैभव था। इसी ऐश्वर्य और वैभव, इन्हीं सुख-सुविधाओं में डूबा वह अपने में मग्न रहता था और इसके परे की वास्तविकताओं को जानना भी नहीं चाहता था। लेखक ने राजकुमार के बयान में संकेतों से काम लिया है। पहला संकेत 'वक्ष में मनुष्य का हृदय धड़कने' में है, यानी जब तक वह मनुष्य था- भोग कर सकता था, तब तक वह आत्मकेंद्रित रहा, उसने दुख के बारे में सोचा तक नहीं; लेकिन अब, जबकि वह मूर्ति बन गया, तो उसे दूसरों के दुख दीखने लगे। एकाएक यह बात उलटी मालूम होती है, पर लेखक इस विडंबना के ज़रिए मनुष्य के स्वभाव पर टिप्पणी कर रहा है कि मनुष्य अपनी मौज-मस्ती में डूबा रहता है और मानवीय गुणों-करुणा, सहानुभूति, समानुभूति - से दूर रहता है। दूसरा संकेत 'उद्यान के चारों ओर की प्राचीर' में है। यह प्राचीर यानी दीवार दरअसल ईंट-पत्थर की नहीं है, बल्कि मनुष्य की अपनी खींची गई दीवार है, जो सुख-सुविधाओं को न खोने की इच्छा की है। तीसरा संकेत 'चारों ओर इतना सौंदर्य' में है; यहाँ भी रूप, सुख, वैभव, ऐश्वर्य को ही सौंदर्य माना गया है। इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

राजकुमार के अनुभव-क्षेत्र का जब विस्तार होता है, तो उसकी अपने आप में डूबे रहने की प्रवृत्ति भी टूटती है। उसकी संवेदना का भी विस्तार होता है। मन में करुणा की भावना जागती है और वह दूसरों के दुख से दुखी होने लगता है। उनका दुख उसे अपना दुख लगने लगता है। इस भाव-स्थिति को हम समानुभूति कहते हैं। राजकुमार चूँकि अब प्रतिमा के रूप में है और वह चल-फिर नहीं सकता, इसलिए वह गौरैया से आग्रह करता है कि वह उसकी भावना को कार्यरूप दे। इस क्रम में वह एक स्त्री, जिसका बच्चा बीमार है; एक तरुण कलाकार, भूख से जिसके सपने टूट रहे हैं और एक लड़की, जिसके पैसे नाली में गिर गए हैं तथा जिसे पिता की डाँट का डर है- का जिक्र करता है और उन्हें अपनी तलवार की मूठ का लाल और आँखों के नीलम दे आने का आग्रह करता है। लेखक इनमें से



एक या दो बातों से काम चला सकता था, मगर उसने तीनों बातों को कथानक में स्थान दिया। जानते हैं क्यों? क्योंकि लेखक हम तक कुछ और भी पहुँचाना चाहता है। वह 'कुछ' यह है कि जब तक हम किसी व्यक्ति या विषय के बारे में कुछ जानते नहीं हैं, हम उसमें रुचि नहीं लेते, लेकिन जब हम धीरे-धीरे उसके बारे में जानने लगते हैं, तो हमारे भीतर उस व्यक्ति या काम के प्रति लगाव पैदा होता है, जो बाद में निष्ठा और समर्पण में बदल जाता है। गौरैया जब नगर में आती है, तो मूर्ति को अपना आश्रय-स्थल बनाती है, क्योंकि वह सोने की है और वहाँ साफ़ हवा आती है। मगर, जैसे ही पानी की बूँद उस पर गिरती है, तो वह उस स्थान को छोड़ने का फैसला करती है। फिर राजकुमार की आँखों में आँसू और उसके चेहरे का भोलापन उसमें थोड़ी दया पैदा करते हैं। और फिर जैसे-जैसे वह राजकुमार के गुणों- दया, करुणा, प्रेम, समानुभूति, त्याग, बलिदान आदि- से परिचित होती जाती है, वह दक्षिण देश जाने के अपने कार्यक्रम को छोड़कर उसी के सान्निध्य में (साथ) रहने का निर्णय लेती है।

यह तो हुई व्यक्ति की बात, अब देखें कि राजकुमार के कामों में उसकी दिलचस्पी का क्या हाल है?

जब राजकुमार मेहनत से फूल काढ़ने वाली स्त्री और बीमार बच्चे के लिए लाल पहुँचाने का आग्रह करता है, तो गौरैया पहले तो अपने कार्यक्रम का और फिर बच्चों के प्रति अपनी चिढ़ का जिक्र करके इस काम में अपनी अरुचि प्रकट करती है। मगर, राजकुमार के प्रति विकसित हुए लगाव के कारण वह तैयार हो जाती है। दूसरी बार, जब राजकुमार तरुण कलाकार को नीलम दे आने का आग्रह करता है, तो गौरैया फिर मिस्र जाने की अपनी उमंग और उल्लास में डूब जाती है, पर काम करने के लिए तैयार हो जाती है। मगर, राजकुमार की आँख निकालने की सोचकर वह विह्वल हो उठती है। इस बार काम न करने का बहाना नहीं है, बल्कि राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का प्रगाढ़ होना है, जो राजकुमार की त्याग की भावना के कारण है। फिर भी, राजकुमार का ही ख्याल करके वह यह काम कर डालती है। तीसरी बार, गौरैया दूसरी आँख निकालने से इन्कार करती है, पर अपने कार्यक्रम को रद्द कर देने को तैयार है। यह राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का प्रमाण है। राजकुमार के पुनः आग्रह पर वह दूसरा नीलम उस लड़की को दे तो आती है, पर राजकुमार के अंधे हो जाने के कारण मिस्र जाने का कार्यक्रम त्याग देती है। राजकुमार द्वारा चले जाने का आग्रह करने पर भी वह नहीं जाती। उसका प्रेम यहाँ समर्पण में बदल जाता है। वह उसका मन लगाने के लिए उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती है, नगर का हाल-चाल बताती है और मूर्ति से स्वर्ण-पत्र ले जाकर निर्धन प्रजा में बाँटती रहती है। यहीं आकर वह स्वयं भी समानुभूति का अनुभव करने लगती है। यानी, अब व्यक्ति के साथ-साथ उसका विषय से भी जुड़ाव हो जाता है, उसमें कर्म के प्रति निष्ठा जाग जाती है। यहाँ तक कि ठंड बढ़ती जाती है, पर गौरैया नगर को छोड़कर नहीं जाती और अपने प्राण त्याग देती है। इस तरह परिचय बढ़ते जाने के साथ-साथ क्रमशः गौरैया के भीतर उन्हीं सद्गुणों का विकास होता जाता है, जो राजकुमार के भीतर विकसित हुए थे।



टिप्पणी

### सुखी राजकुमार

‘सुखी राजकुमार’ के कथानक को बुनते समय लेखक ने बड़े ही कौशल से समाज के धनी और निर्धन वर्ग के जीवन और व्यवहार की विषमताओं को भी उभारा है। पहला संदर्भ तो राजकुमार के मनुष्य-जीवन और प्रतिमा के रूप में स्थापित होने का है, जिसके विषय में आप जान चुके हैं। दूसरा संदर्भ राजकुमारी की सर्वसुंदरी अंगरक्षिका का है। कहानीकार उसकी पोशाक पर फूल काढ़ने वाली स्त्री के श्रम (सुई से हाथ का क्षत-विक्षत होना, चेहरा दुबला और थका होना, थककर सो जाना) और उसकी जीवन-स्थितियों (बच्चे का बुखार से तड़पना, बच्चे के लिए फल न ला सकना) का जिक्र करता है, तो गौरैया को उसके घर तक पहुँचाने से पहले उस ऊँचे महल के छज्जे के ऊपर से भी गुज़ारता है, जहाँ वह सुंदरी अंगरक्षिका प्रेमी के कंधे पर हाथ रखे प्रेम की बात करती है और श्रम करने वाली स्त्री के बारे में नाराज़गी के स्वर में कहती है— “मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं।” इसी तरह बड़े-बड़े जहाज़ों के साथ-साथ मजदूरों के सीने पर रस्सियाँ बाँधकर नाव खींचने का जिक्र, अमीरों के महलों में रंगरलियाँ मनाने के साथ-साथ गरीबों के हाथ फैलाकर भीख माँगने का जिक्र भी इसी वैषम्य को उजागर करने के लिए है।

इस कहानी में लेखक ने सौंदर्य पर कई दृष्टियों का उद्घाटन किया है। आरंभ में हम राजकुमार की सौंदर्य-दृष्टि और उसकी प्रतिमा को सुंदर मानने वालों के बारे में पढ़ चुके हैं। राजकुमार सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य-विलास आदि में सुंदरता तलाशता है, तो लोग उसकी प्रतिमा के रूप और कीमत में। सौंदर्य का एक और रूप है, वह है— रहस्य और रोमांच में, अद्भुत होने में। गौरैया मिस्र देश के संदर्भ में अपनी जिन कल्पनाओं की चर्चा करती है, उनमें ऐश्वर्य के साथ-साथ अद्भुत और रहस्यमयी चीज़ों का उल्लेख है। इसी तरह गौरैया राजकुमार को लाल बगुले, स्फिंक्स की मूर्ति, चंद्रमा की घाटियों के राजा, हरे साँप आदि अनोखे प्राणियों और वस्तुओं की कहानियाँ सुनाती है। इसके विपरीत लेखक राजकुमार की प्रतिमा से कहलवाता है— “प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है— मनुष्य का दुख-दर्द। दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं।” इस तरह लेखक सौंदर्य के ‘अद्भुत’ या ‘सामान्य’ में होने की दृष्टियों का उल्लेख करता है और पूरी कहानी पढ़ने से पता लगता है कि उसका झुकाव ‘सामान्य’ में सौंदर्य देखने की ओर है।

कहानी के अंत में मेयर और उसके सभासद तथा नगर का कलाविज्ञ— सभी की दृष्टि ‘रूप’ में सौंदर्य को तलाशने की है। उनको अब सुखी राजकुमार ‘पत्थर का भिखारी’ मालूम होता है, क्योंकि उसके स्वर्ण-पत्र (त्वचा की कांति), नीलम (आँखें) और लाल (शानोशौकत) अब गायब हो चुके हैं और वह मटमैला और मनहूस दिखाई देने लगा है। लेकिन, ईश्वर की दृष्टि में वह अब सुंदर है, क्योंकि उसका सौंदर्य उसके कर्मों में निहित है। तो, इस तरह सौंदर्य रूप में निहित है या कर्म में— यह प्रश्न भी लेखक हमारे सामने रखता है। इसकी पुष्टि राजकुमार के प्रति गौरैया के व्यवहार से भी होती है। जैसे-जैसे राजकुमार की प्रतिमा कुरूपता की तरफ़ बढ़ती है, गौरैया का उसके प्रति प्रेम, निष्ठा और समर्पण बढ़ता जाता है; क्योंकि उसके रूप-सौंदर्य के कम होने के पीछे उसके



टिप्पणी

कर्म-सौंदर्य का विकसित होना है, जिसमें वह भी भागीदार है। गौरैया की यह भागीदारी भी ईश्वर द्वारा सराही जाती है और वह कूड़े के ढेर से उठकर स्वर्ग की डालियों की हकदार बनती है।

मेयर और सभासदों के ज़रिए लेखक ने आज की व्यवस्था और राजनेताओं की असंवेदनशीलता और स्वार्थपरता पर तीखा व्यंग्य किया है। जिस तरह 'अंधेर नगरी' में नगर देखने में सुंदर लगता है, पर वहाँ व्यवस्था सुचारु नहीं है। राजा विलास में डूबा है और मंत्री आदि उसकी चापलूसी में। उसी तरह, यहाँ मेयर भी अविवेकी और स्वार्थतत्पर है और सभासद 'हाँ-हाँ' करने वाले। वहाँ राजा भी वैकुंठ जाना चाहता है और उसके दरबारी भी, यहाँ मेयर अपनी मूर्ति लगवाना चाहता है और उसके सभासद भी। हम अपने परिवेश में भी ऐसी स्थितियाँ देखते हैं और समझते हैं कि ये हमें आगे चलकर किसी भयानक संकट की ओर ले जा सकती हैं, सोचिए और अपने विचार यहाँ लिखिए:



### पाठगत प्रश्न-13.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नगर के लोग राजकुमार की प्रतिमा की तारीफ़ करते थे, क्योंकि-

- (क) जब वह जीवित था, तो लोगों की सहायता करता था। ☐
- (ख) उसकी प्रतिमा में बहुमूल्य वस्तुएँ लगी थीं। ☐
- (ग) मूर्ति बनने पर राजकुमार का आत्म-विस्तार हो गया था। ☐
- (घ) प्रतिमा में विश्व-भर के कलाकारों की प्रतिभा लगी थी। ☐

2. मनुष्यों को नहीं, एक मूर्ति को दूसरों के दुख दिखते हैं- इसमें क्या है?

- (क) विडंबना ☐ (ख) मनुष्य का स्वभाव ☐
- (ग) चमत्कार ☐ (घ) मनुष्य-विरोधी भाव ☐

### 13.2.2 चरित्र-चित्रण

आप यह तो समझ ही चुके हैं कि कहानी की जान उसकी कथावस्तु होती है और कथानक उसका ढाँचा। इस ढाँचे को सजीवता प्रदान करते हैं उसके पात्र या चरित्र। उन्हीं के द्वारा कथानक आगे बढ़ता है और हम उसे महसूस कर पाते हैं। कहानी की समय-सीमा कम होती है, अतः पात्र भी सीमित होते हैं। इस कहानी में तो सिर्फ़ दो ही मुख्य पात्र हैं। एक राजकुमार की मूर्ति और दूसरी गौरैया। इनके अतिरिक्त प्रसंगवश कुछ पात्र और आ जाते हैं, जिनकी भूमिका सिर्फ़ उस हिस्से को या कही जाने वाली बात को



टिप्पणी

## सुखी राजकुमार

थोड़ा उजागर कर देने की है। ये गौण पात्र हैं! इन पर हम 'वातावरण' शीर्षक के अंतर्गत चर्चा करेंगे।

### सुखी राजकुमार

सुखी राजकुमार की प्रतिमा इस कहानी का केंद्र-बिंदु है। इसलिए हम उसे कहानी का मुख्य पात्र मान सकते हैं। अब आप कहेंगे कि प्रतिमा भी भला कहीं कहानी की मुख्य पात्र हो सकती है। पात्र होने के लिए उसे मनुष्य या कम-से-कम जीवित प्राणी तो होना ही चाहिए न ! यहाँ यह जान लेना जरूरी है कि विश्व-भर में कहानी की परंपराओं के विकास-क्रम में मानवेतर यानी मनुष्य के अलावा अन्य प्राणी कहानियों के पात्र बनते रहे हैं। अपने यहाँ भी 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' में पशु-पक्षी कहानियों के पात्र हैं। इनके अतिरिक्त 'सिंहासन बत्तीसी' में पुतली भी पात्र है। 'विक्रम और बेताल' की कहानियाँ भी आपने सुनी-पढ़ी होंगी। इनमें बेताल (जो जीवित मनुष्य नहीं है) प्रमुख पात्र है। दरअसल, कहानीकार विशेष प्रयोजन से अपने पात्रों का चुनाव करता है।

'सुखी राजकुमार' कहानी में प्रतिमा को पात्र बनाने का विशिष्ट उद्देश्य है। कहानीकार समाज में मानवीय संवेदनाओं के तार-तार हो जाने की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता है और उनके ही सर्वोपरि होने का संदेश देना चाहता है। इसके लिए वह प्रतिमा को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुखी राजकुमार के जीवन-काल का भी जिक्र करता है। जीवित राजकुमार और प्रतिमा के रूप में स्थापित राजकुमार की जीवन-दृष्टि में अद्भुत कन्ट्रास्ट (वैषम्य) है। जीवित रहते हुए वह भोग-विलास में डूबा रहता है और अपने से बाहर की दुनिया के बारे में अनजान बना रहता है, किंतु प्रतिमा के रूप में स्थापित होने पर उसे अपने नगर में चारों ओर दुख के दर्शन होते हैं और अब यद्यपि उसका 'हृदय जस्ते का है, पर फटा जाता है।' उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार आने लगता है। उसकी इन संवेदनाओं को कार्यरूप में परिणत करने का काम भी एक मानवेतर प्राणी (नन्हीं गौरैया) द्वारा ही होता है। यहाँ पर यह भी महत्वपूर्ण है कि वह जिन मनुष्यों-नृत्य-वसन पर फूल टाँकने वाली स्त्री और उसका बीमार बच्चा, तरुण कलाकार, सौदा नाली में गिरा चुकी लड़की आदि के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करता है, वे भी उस संवेदना को महसूस नहीं करते। वे या तो अनजान रहते हैं, या अपने उद्यम की उपलब्धि समझते हैं, या फिर कौतूहल मात्र से ग्रस्त होते हैं। बाद में, मेयर और उसके साथियों के व्यवहार के माध्यम से इस वैषम्य को और ज्यादा उभारा गया है।

कहानी के आरंभ में हम एक सुखी राजकुमार की प्रतिमा से रू-ब-रू होते हैं, जिसका शरीर 'सोने के पत्तों से मढ़ा था, आँखों के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा-सा लाल जड़ा था' और 'लोग उस प्रतिमा के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे।' हमें लगता है कि अपने वैभवपूर्ण सौंदर्य की प्रशंसा के कारण यह राजकुमार 'सुखी' होगा, लेकिन अगले ही क्षण हमें पता लगता है कि यह राजकुमार सुखी नहीं है, क्योंकि उसकी उन सुंदर आँखों से आँसू की बूँदें गिर रही हैं। कदाचित् यह इसलिए है





कि उसके अकेलेपन और दुख को बाँटने वाला कोई दूसरा (नहीं गौरैया) अब उसके पास है। वह गौरैया को बताता है कि जब वह जीवित था, तो आनंद-महल में रहता था, सुख-सुविधाओं और भोग-विलास में डूबा रहता था, उसने कभी दुख का साक्षात्कार नहीं किया था, क्योंकि उसके चारों ओर इतना सौंदर्य था कि उसने कभी बाहर देखने का प्रयत्न ही नहीं किया। यानी, जीवित रहते वह अपने आप में मस्त रहने वाला प्राणी था। लेकिन, मूर्ति के रूप में ऊँचे स्थान पर स्थापित हो जाने पर उसे उस आत्मबद्धता से मुक्ति मिली और नगर में रहने वाले लोगों के हालचाल पता लगने लगे। उसने पाया कि नगर की अधिकांश जनता बहुत बुरे हाल में जी रही है। रोग, निर्धनता, भुखमरी से ग्रस्त है। कुछ लोग ज़रूर ऐशोआराम की जिंदगी जी रहे हैं, पर वे अन्य अभावग्रस्त लोगों की वास्तविकता के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। उसका हृदय, जो अब मनुष्य का संवेदनशील कोमल हृदय नहीं, बल्कि ठोस धातु जस्ते का बना है, इस दुखी समाज को देखकर फटने लगता है। उसमें मानवीय संवेदनाओं का संचार होता है। व्यापक जनता का दुख उसका अपना सुख बन जाता है और वह अपने वैभव को त्यागकर, अपने अंगों का भी प्रतिदान करके उनके दुखों को दूर करना चाहता है। वह गौरैया से बहुत मार्मिक शब्दों में बार-बार आग्रह करके अपनी संवेदनाओं को कार्यरूप में परिणत करता है। यहाँ तक कि वह अब अपनी 'सुखी राजकुमार' वाली पहचान से 'पत्थर के भिखारी' वाली पहचान तक पहुँच जाता है। मगर, अब उसे पूरे तौर पर संतोष है और वह वास्तविक रूप में सुखी है। यानी असली सुख अपने शरीर के लिए भोग-विलास में नहीं, बल्कि अपने तन-मन-धन को लुटाकर भी मानवता का भाव अनुभव करने में है। वास्तविक सौंदर्य रूप-रंग, वेशभूषा, आभूषण-अलंकार में नहीं, बल्कि मानवता के लिए समर्पित आत्मा के सौंदर्य में है। इसकी पुष्टि कहानी के अंत में ईश्वर द्वारा उसे स्वर्ग के उद्यान में स्थान देने से भी होती है।

राजकुमार के हृदय में मानवता का भाव जागता है, तो उसकी भाषा भी मानवीय कोमलता और प्रेम से भर उठती है। इसीलिए तो वह गौरैया से अत्यधिक विनम्रता और अनुरोध के स्वर में अपनी बात कहता है। उसके आग्रह में आदेश का नहीं, याचना का भाव रहता है। उसकी संवेदना चूँकि वास्तविक हैं, इसीलिए वह अपना सर्वस्व अर्पित करने तक तो गौरैया को रोकने की भरसक कोशिश करता है, पर सब कुछ लुटा देने के बाद उसे अपने साथ भर के लिए नहीं रोकना चाहता। अब वह उससे आग्रह करने लगता है कि वह अपने पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपने साथियों के पास दक्षिण दिशा को रवाना हो जाए।

इस पात्र पर विचार करते हुए एक बात बहुत महत्वपूर्ण मालूम होती है, वह यह कि दुखों को देखकर पिघलने वाला हृदय लोहा गलाने के कारखाने की भट्टी में भी नहीं पिघलता। आखिर ऐसा क्यों ? ज़रूर कहानी-लेखक हम से कुछ और कहना चाहता है, लेकिन वह सीधे न कहकर हमें सोचने के लिए मौका देता है। आप सोचिए कि इसका क्या आशय होगा ? क्या वह हमें यह संकेत करता है कि हृदय मानवीय संवेदनाओं से द्रवीभूत हो सकता है, पर दूसरों के स्वार्थों की पूर्ति के अनुरूप ढलने को तैयार नहीं है अर्थात् सच्ची



टिप्पणी

## सुखी राजकुमार

मानवीय भावनाओं से पूर्ण हृदय में दूसरों के दुखों के प्रति कोमलता होती है, पर ऐसी कोमलता नहीं कि दूसरे उसे अपने विचारों और हितों के लिए इस्तेमाल कर ले जाएँ। यानी, दूसरों के काम आने का अर्थ है— उनके दुख-दर्द में काम आना, न कि उनकी स्वार्थसिद्धि का साधन बनना। एक और संकेतार्थ हो सकता है कि एक बार सच्ची मानवता को समर्पित हुए हृदय को किसी और रास्ते पर नहीं डाला जा सकता।

## गौरैया

राजकुमार के विषय में आप जान चुके हैं कि उसके भीतर मानवीय संवेदनाओं का उद्रेक तब होता है, जब वह अपने परिवेश और उसमें व्याप्त दुखों से परिचित होता है; मगर गौरैया के भीतर दूसरों के प्रति ममता का सोता फूटने का कारण राजकुमार का साथ है, उसका व्यवहार है। यानी दूसरों के प्रति सहानुभूति के भाव तक पहुँचने के दो कारण इस कहानी में हैं, पहला—दुख का साक्षात्कार और दूसरा—मानवीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति के संपर्क में आना अर्थात् सत्संग।

इस कहानी में जब गौरैया से हमारा साक्षात्कार होता है, तो वह हमें नकचढ़ी और अभिमानी मालूम होती है। उसका पहला ही संवाद है—“मैं समझ रही थी कि यह शहर मेरा स्वागत करेगा।” वह मूर्ति के पास उतरती है और संतोष प्रकट करती है कि उसका ‘शयनागार सोने का है।’ राजकुमार के यह कहने पर कि उसका हृदय जस्ते का है, वह निराश होती है—‘अच्छा, तो यह राजकुमार ठोस सोने का नहीं है।’ राजकुमार जब उससे आग्रह करता है कि वह उसकी तलवार की मूठ में लगा लाल बीमार बच्चे और उसकी श्रमिक माँ को दे आए, तो वह उस पचड़े में नहीं पड़ना चाहती, क्योंकि वह तो अपनी कल्पनाओं की दुनिया में खोई है, जहाँ नदी है, कमल के फूल हैं, राजाओं के मकबरे हैं, रत्न हैं। वह इतनी आत्म-सीमित है कि दुबारा आग्रह करने और बच्चे के उदास और प्यासे होने के बारे में बताने पर भी इन्कार ही करती है—“उँह ! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है.....पिछले वसंत में दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज़ उड़ती हूँ, किंतु यह बड़ी ही अपमानजनक बात है।” लेकिन, सोने से मढ़े और रत्नों से जड़े राजकुमार को उदास देखकर उसे ‘दया’ आ जाती है। आप जानते ही होंगे कि दया या तरस के भाव में हम दूसरे के समान अनुभव नहीं करते, बल्कि हम उससे भिन्न और अक्सर अधिक सक्षम या बड़े होते हैं, तो वह गौरैया राजकुमार पर तरस खाकर उसका काम करने को तैयार होती है। मगर यह क्या ? वह तो सिर्फ़ लाल पहुँचाने गई थी, फिर बीमार बच्चे के ऊपर अपने पंखों से हवा क्यों करने लगी ? दरअसल, वह गई तो थी राजकुमार की उदासी पर तरस खाकर, लेकिन बच्चे को बुखार से तड़पते देख उसे भी दुख का अनुभव हुआ और वह बच्चे के प्रति सहानुभूति महसूस करने लगी। उसके इस काम ने उसके मन-मस्तिष्क को अपने प्रभाव में ले लिया। इसी भावना के उद्रेक के कारण उसे उस दिन ठंड भी नहीं लग रही थी। दूसरों की भलाई, उनके साथ संबंध की गरमी ने उसे ठंड का अनुभव नहीं होने दिया। मगर, गौरैया की अनोखेपन की तलाश, सुखमय जीवन का सपना और प्रकृति के सौंदर्य के प्रति कुतूहल अभी मौजूद था, इसीलिए वह राजकुमार के अगले आग्रह पर पहले तो



अपने कार्यक्रम के बारे में बताती है, लेकिन पिछले दिन के अनुभव के तहत उससे दूसरा लाल दे आने के लिए पूछती है। किंतु, राजकुमार द्वारा की गई अपनी आँख निकालकर दे आने की बात से उसके त्याग के स्तर को महसूस कर उसका हृदय फट पड़ता है और वह रोने लगती है तथा इस काम को करने से इन्कार कर देती है। आपने गौर किया कि गौरैया के पहले इन्कार और इस इन्कार में फ़र्क है ! हाँ, पहली बार वह अपनी दुनिया में मगन होने के कारण इन्कार करती है, पर इस बार के इन्कार में राजकुमार के प्रति प्रेम की भावना है और साथ ही, त्याग की उस भावना से अभिभूत होना भी है, जो मनुष्य के दूसरों के लिए खुद को अर्पित कर देने से पैदा होती है। तीसरी बार फिर गौरैया अपने सपनों की दुनिया में जाने की चर्चा करती है, पर इस बार वह राजकुमार के आग्रह पर सिरे से इन्कार नहीं करती। वह कहती है कि “कहो तो मैं आज रात-भर और रुक जाऊँ, मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिल्कुल ही अंधे हो जाओगे !” राजकुमार के फिर भी आग्रह करने पर वह उसकी दूसरी आँख उस लड़की को दे तो ज़रूर आती है, पर अपने सपनों के देश जाने के कार्यक्रम को रद्द कर देती है। वही गौरैया, जो अभावग्रस्त लोगों को कुछ दे आने के राजकुमार के आग्रह पर अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं-कल्पनाओं का हवाला देने लगती थी, अब राजकुमार के मिस्र देश चले जाने के आग्रह पर भी इन्कार कर देती है और उसी के साथ रहने का फैसला करती है।

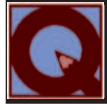
गौरैया राजकुमार को दुनिया की आश्चर्यजनक वस्तुओं और घटनाओं की कहानियाँ सुनाती है। मगर, राजकुमार अब जान चुका है कि रहस्य, रोमांच, आश्चर्य चीजों के अनोखेपन में नहीं, बल्कि इन्सान के दुख-दर्द में है। वह गौरैया को प्रेरित करता है और वही गौरैया, जो बच्चों से चिढ़ती थी, अब उनकी वास्तविक जिंदगी के मर्म को पहचानती है और राजकुमार की मूर्ति के स्वर्ण-पत्र उन बच्चों में बाँटती है, उनके चेहरे पर झलकने वाली गुलाबी किरणों से संतुष्ट होती है। याद रखें कि अब बच्चों के दुख-दर्द को राजकुमार नहीं देख सकता था, क्योंकि वह अंधा हो चुका था; गौरैया ही अब उनकी तकलीफों से व्यथित हो रही थी। उनके दुख-दर्दों में भागीदारी करती गौरैया, राजकुमार के गुणों से अभिभूत गौरैया, प्रेम की उदात्त भावना से पूर्ण गौरैया स्वयं अपने प्राण न्योछावर कर देती है। गौरैया के इस प्रेम, समर्पण और त्याग की भावना की पुष्टि कहानी के अंत में ईश्वर द्वारा स्वर्ग की डालों पर उसे स्थान देने से होती है, यद्यपि नगर का प्रभु वर्ग-मेयर और उसके साथी- उसे कूड़ेखाने में फेंकने लायक समझता है।

इस तरह, गौरैया के चरित्रांकन में लेखक इस बात को हमारे समक्ष रखता है कि सज्जनों के साथ से व्यक्ति के सोचने-समझने के नज़रिए में अंतर आता है और यथार्थ को देखकर उसके अंतःकरण की आँखें खुलती हैं तथा वह भी उन सद्गुणों से युक्त हो जाता है। केवल दुर्गुण ही संक्रामक नहीं होते, बल्कि सद्गुण भी एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे तक फैलते हैं; आत्मा को मानवता के उच्च शिखरों तक ले जाते हैं।



टिप्पणी

सुखी राजकुमार



पाठगत प्रश्न-13.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सुखी राजकुमार का हृदय भट्टी में न गलने का अभिप्राय है :

(क) भ्रष्ट अधिकारियों के कारण जस्ते में मिलावट होना ☐

(ख) दान करते हुए राजकुमार की संवेदनाओं का चुक जाना ☐

(ग) गौरैया का साथ पाने के लिए कूड़ेदान में फेंके जाने का यत्न ☐

(घ) संवेदनाओं को स्वार्थ-सिद्धि का साधन न बनने देना ☐

2. गौरैया सुखी राजकुमार के सान्निध्य में क्या सीखती है ?

(क) तरस खाना ☐ (ख) निस्वार्थ प्रेम ☐

(ग) दया करना ☐ (घ) आत्म-विश्लेषण ☐

3. मिस्र देश का बार-बार जिक्र करने से गौरैया के चरित्र की किस बात का पता लगता है ?

(क) बात को टालने की प्रवृत्ति का ☐

(ख) साथियों के प्रति अटूट लगाव का ☐

(ग) पर्यटन के प्रति उन्माद का ☐

(घ) अनोखेपन और ऐश्वर्य के प्रति लगाव का ☐

### 3.2.3 संवाद

आपने देखा कि किस तरह कहानी के पात्र उसके कथानक को विस्तार देते हैं और कथावस्तु को हमारे सामने उद्घाटित करते हैं। पात्रों को प्रस्तुत करने के प्रायः दो तरीके होते हैं— या तो लेखक स्वयं पात्रों के विषय में जानकारी देता है या फिर उनके संवादों के माध्यम से उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करता है। कहानी-कला के विकास के साथ-साथ लेखक द्वारा अपने पात्रों और कथावस्तु के बारे में स्वयं ब्यौरे देना बहुत अच्छा नहीं समझा जाता। इसीलिए, कहानीकार संवादों और स्थितियों के द्वारा अपने पात्रों और कथावस्तु को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।



‘सुखी राजकुमार’ कहानी में भी कहानीकार वर्णन कम-से-कम करता है और संवादों तथा स्थितियों के माध्यम से कहानी कहता है। यानी, इस कहानी में नेरेशन (वर्णन) बहुत कम है। पूरी कहानी संवादों के ज़रिए आगे बढ़ती है। इस कारण कहानी के कथानक में बहुत चुस्ती आ गई है। एक भी शब्द हमें फ़ालतू नहीं लगता। राजकुमार के आरंभिक संवाद से हमें उसके अतीत और वर्तमान की जीवन-स्थितियों, मनोदशा और वैचारिक परिवर्तन का पता कुछ ही वाक्यों में मिल जाता है। साथ ही, उसके विषय में यह भी पता लग जाता है कि वह सुखी समझा जाता है, पर सुखी है नहीं। इसके अलावा इसी संवाद से कहानी अपने मुख्य विषय पर आ जाती है।

जिस तरह राजकुमार के चरित्र में परिवर्तन होता है, वैसे ही गौरैया के चरित्र का भी विकास होता है। आरंभ की नकचढ़ी और आत्म-सीमित गौरैया कहानी के अंत में उदात्त चरित्र वाली दिखाई पड़ती है। कहानीकार गौरैया के चरित्र के इस परिवर्तन के विषय में अपनी ओर से कोई टिप्पणी नहीं करता, उसके संवादों के माध्यम से पाठक खुद इस निष्कर्ष तक पहुँचता है। आइए, ज़रा इन संवादों पर ध्यान दें:

- मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा।
- इस प्रतिमा से क्या फ़ायदा, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती!
- उँह! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है।
- अच्छा, आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ?
- प्यारे राजकुमार, ... यह तो मुझसे न होगा....
- अब तुम अंधे हो.... इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूँगी।

गौरैया की तरह ही राजकुमार के हृदय की विशालता और उसकी सोच-समझ के विषय में भी उसके संवादों से ही पता लगता है। कहानी के अंत में मेयर एवं उसके साथी सभासदों के संवादों से उनकी क्षुद्र मानसिकता और स्वार्थपरता का तथा राजकुमार एवं गौरैया के त्याग, बलिदान और उच्चादर्श की वास्तविक कीमत का अंदाज़ा ईश्वर के संवाद से होता है।

कहानी में आम लोगों के दुखों के प्रति अभिजात वर्ग के उपेक्षापूर्ण रवैये को भी संवादों से ही उभारा गया है। सुखी राजकुमार के आरंभिक कथन में उसके जीवन-काल का उल्लेख; राजकुमारी की अंगरक्षिका का कहना “मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं”; बारिश में चौकीदार का पुलिया के नीचे सिकुड़े बैठे बच्चों से कहना— “भागो यहाँ से” और मेयर का बड़ी हिकारत से मूर्ति के विषय में कथन— “यह तो बिल्कुल पत्थर का भिखारी मालूम देता है”; सदस्यों की सहमति— “बिल्कुल-बिल्कुल पत्थर का भिखारी!”— ये सभी इस संदर्भ में द्रष्टव्य हैं।

राजकुमार के परदुःखकातर (दूसरों के दुख से दुखी होने का गुण) हृदय की कोमलता उसके संवादों में मौजूद है। उसके संवादों में आदेश का स्वर नहीं, बल्कि अनुरोध की



टिप्पणी

### सुखी राजकुमार

विनम्रता और आग्रह की आत्मीयता है। वह गौरैया से किस तरह पेश आता है और किस तरह लोगों के जीवन में सुख का संचार करने वाले काम कराता है- इस पर गौर कीजिए:

- गौरैया! गौरैया! सिर्फ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है- उदास भी है!
- गौरैया! गौरैया! नहीं गौरैया! क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं...
- लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?
- गौरैया! प्यारी गौरैया!.... तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए।
- नहीं-नहीं गौरैया! अब तुम मिस्र देश को जाओ।

इस प्रकार 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवाद छोटे-छोटे, चुस्त-दुरुस्त, सहज, सरल, रोचक और भावानुकूल हैं। वे कथानक को आगे बढ़ाने का काम करते हैं, पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को उजागर करते हैं और कथावस्तु के मुख्य बिंदुओं का उद्घाटन करते हैं। इसके साथ-साथ वातावरण की सृष्टि भी करते हैं और उस पर टिप्पणी भी।



### क्रियाकलाप-13.2

इस कहानी को पढ़ते हुए आपने राजकुमार के संवादों पर ध्यान दिया? राजकुमार के प्रायः सभी संवाद गौरैया से हैं। वह गौरैया से परोपकार के काम कराना चाहता है। इसके लिए वह उसे आदेश तो दे नहीं सकता, लेकिन वह उसके आगे गिड़गिड़ाता भी नहीं है। एक ही तरीका है कि वह उससे आग्रह करे, और यह आग्रह भी आत्मीयतापूर्ण हो, ताकि ठुकराया न जा सके। आप देखते हैं कि राजकुमार गौरैया से आत्मीय संबोधन करता है- 'प्यारी गौरैया', 'नहीं गौरैया', 'गौरैया-गौरैया' आदि। इसी के साथ उसके वाक्य-विन्यास में आग्रह का स्वर है-

1. "सिर्फ आज रात तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है- उदास भी।"
2. "क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं?"
3. "लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?"

उपर्युक्त तीनों वाक्यों पर ध्यान दीजिए। पहली बार 'सिर्फ आज... कर दो' कहकर अनुरोध किया गया है, दूसरी बार चूँकि साधारण अनुरोध किया जा चुका है, इसलिए 'और नहीं ठहर सकतीं?' की याचना है। पहले वाक्य में अपनी बात कही गई है, दूसरे में निर्णय दूसरे पर छोड़ते हुए अपने पक्ष में निर्णय लेने का आग्रह है। तीसरी बार में खुद को बिल्कुल महत्त्व न देते हुए गौरैया के निर्णय को सर्वोच्च रखा गया है और उसकी संवेदनशीलता जगाते हुए आग्रह किया गया है।





टिप्पणी

आइए, अब विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किए जाने वाले वाक्यों के निर्माण का अभ्यास करें:

(क) अगर आपको भूकंप अथवा बाढ़ जैसी आपदाओं में लोगों की मदद के लिए सहयोग माँगना हो, तो आप किस-किस तरह से अपनी बात कह सकते हैं?

(i) .....

(ii) .....

(iii) .....

(ख) आपकी साइकिल या स्कूटर दूसरे से टकरा गया है और वह तैश में है। आप किस तरह उसे शांत करेंगे?

(i) .....

(ii) .....

(iii) .....

### 13.2.4 वातावरण

जैसा कि हम जान चुके हैं, 'सुखी राजकुमार' कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहानीकार स्वयं कुछ नहीं कहता, अपितु अपने पात्रों, उनके क्रियाकलापों, उनके व्यवहार के तरीकों से अपनी बात हम तक पहुँचाता है। मुख्य कथावस्तु और चरित्रों के विषय में तो बहुत से कहानीकार ऐसा करते हैं, पर वे भी देश, काल और वातावरण का वर्णन प्रायः अपनी ज़बान से करने लगते हैं। किंतु, इस कहानी में कहानीकार की खूबी यह है कि वह वातावरण को भी अपने पात्रों और उनके जीवनानुभवों के द्वारा ही अभिव्यक्त करता है। देश और काल यानी स्थान और कहानी के घटना-समय का उल्लेख न करके वह कहानी को सार्वदेशिक और सार्वकालिक बना देता है। कहानी कहाँ की है? इसका उत्तर कहानी में मिलेगा- एक नगर की। किस नगर की? कोई उल्लेख नहीं। कहानी कब की है?- कोई उल्लेख नहीं। अब कहानी को पूरा पढ़ जाइए- लगेगा कि यह तो हमारे अपने यहाँ की-सी है, हमारे अपने ही समय की है! यानी कहानी में जो स्थितियाँ हैं, जो चरित्र हैं, जो मानव-स्वभाव और व्यवहार-प्रणाली है, जो मुद्दे हैं, जो प्रश्न हैं- वे हमारे अपने परिवेश के हैं, यद्यपि यह कहानी इंग्लैन्ड में लगभग सवा सौ साल पहले लिखी गई थी। इसका एक और कारण यह भी है कि कहानी का विषय मानव-सभ्यता के विकास-क्रम का वह दुर्भाग्यपूर्ण सोपान है, जिसमें मनुष्य आर्थिक आधार पर वर्गों में बँट चुका है। कुछ लोगों के ऐय्याशीपूर्ण जीवन जीने की ललक ने बड़े मानव-समूह को कंगाली, बदहाली और भुखमरी तक पहुँचा दिया है। इसी वर्ग ने सुंदरता और सुख की धन-वैभव आधारित परिभाषाएँ गढ़ ली हैं। कहानीकार पूरी कहानी में स्थितियों के वैषम्य (कन्ट्रास्ट) के ज़रिए इस प्रश्न को हमारे सामने उभारता चलता है और



## टिप्पणी

### सुखी राजकुमार

हमारी संवेदनाओं को झकझोर कर हमारे भीतर वैचारिक प्रेरणा पैदा कर देता है। कुछ उदारहण लीजिए:

1. राजकुमार की जीवन-काल की जीवन-दृष्टि और मूर्ति-रूप में स्थापित होने के बाद की जीवन-दृष्टि।
2. गौरैया का आरंभिक व्यवहार, विशेषतः तब का, जब राजकुमार दुखी और परेशान लोगों के विषय में बताता है और गौरैया मिस्र देश की सुखद तथा वैचित्र्यपूर्ण कल्पनाओं का बयान करती है।
3. गौरैया राजकुमार के भलाई के कामों के लिए जब नगर पर उड़ान भरती है, तो गिरजे और देवदूतों की मूर्तियों का जिक्र है। यानी, नगर का धनी वर्ग धर्म के कर्मकांडों और शास्त्र पर तो आस्था रखता है, पर उसके व्यावहारिक पक्ष, जैसे- सत्य, परोपकार, समानता आदि पर नहीं सोचता।
4. महल के छज्जे पर किशोरी प्रेम की अद्भुत शक्ति जिक्र करती है, पर उसके लिए प्रेम का अर्थ सिर्फ स्त्री-पुरुष संबंध या बाहरी सौंदर्य तक सीमित है, तभी तो वह फूल काढ़ने वाली स्त्री से खफ़ा है। अभिजात-वर्ग पर यहाँ स्वतः ही टिप्पणी हो जाती है।
5. राजकुमार द्वारा नगर का हाल जानने के लिए गौरैया को भेजने पर गौरैया का यथार्थ-अवलोकन : “अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं। “भागो यहाँ से!” चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।”

कहानी में गौण पात्रों का सृजन परिवेश को चित्रित करने के लिए ही किया गया है। आइए, ज़रा इन पात्रों पर भी ध्यान दीजिए:

1. **राजकुमारी की अंगरक्षिका**, जो मेहनतकश लोगों के विषय में अभिजात-वर्ग के रवैये को अभिव्यक्त करती है- “मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं।”
2. **बीमार बच्चा**, जो गौरैया द्वारा अपने पंखों से हवा करने पर स्वस्थ महसूस करता है। यह पात्र सिर्फ गौरैया के भीतर आ रहे परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए है।
3. **तरुण कलाकार**, जो रंगमंच के लिए नाटक लिख रहा है। वह निर्धन है, पर उसकी आँखों में भविष्य के सपने हैं और है- महत्वाकांक्षा। कलाकार की महत्वाकांक्षा और उसकी आत्ममुग्धता की अभिव्यक्ति उसके कथन द्वारा होती है- “ओह, मालूम होता है, मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर सकूँगा।”



टिप्पणी

4. **रोती हुई लड़की**, जिसका सौदा नाली में गिर गया है और जिसे अपने पिता से पिटने का डर है। यह सरल हृदय निर्धन बालिका नीलम को सिर्फ रंगीन काँच का टुकड़ा समझती है। उसका यह समझना गरीब लोगों की सरलता और गरीबी की भीषणता को (वे इतने गरीब हैं कि चीजों की कीमत को भी नहीं जानते) उजागर करता है।

उपर्युक्त चारों पात्रों की योजना का एक और उद्देश्य मालूम होता है, वह यह कि चारों ही पात्र यह नहीं जानते कि कौन उनके लिए उत्सर्ग (बलिदान) कर रहा है।

5. **वे बच्चे**, जिनके चेहरे पीले पड़ गए हैं, जो वर्षा से बचने के लिए पुलिया के नीचे बैठे हैं, पर चौकीदार उन्हें वहाँ से भी भगा देता है। इन पात्रों की योजना व्यापक जनता के दुख-दर्दों की भयावहता को स्पष्ट करने और अभिजात वर्ग के लिए काम करने वाले मामूली आदमियों के भी असंवेदनशील बन जाने को उजागर करती है। इसके अतिरिक्त इनके जरिए राजकुमार की उदारता की चरम सीमा (स्वर्ण-पत्रों के रूप में अपनी खाल को भी उधड़वा देना) और गौरैया के अंदर समानुभूति का विकास (क्योंकि इनके विषय में राजकुमार ने नहीं, बल्कि खुद गौरैया ने महसूस किया है) भी सूचित होता है।
6. **मेयर**, जिसके ऊपर नगर की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी है, जिसे नगर की जनता के दुख-दर्द और उनकी गरीबी नहीं दिखती, पर मूर्ति का भद्दापन दीख जाता है, क्योंकि दरअसल वह स्वार्थ में अंधा और आत्मकेंद्रित है। उसकी नज़र राजकुमार की जगह अपनी मूर्ति लगवाने पर है। उसके सभासद भी चाटुकार और स्वार्थी हैं। वे सभी बातों पर मेयर की हाँ-में-हाँ मिलाते हैं, जनता के मुद्दों पर बहस नहीं करते; पर अपनी मूर्ति लगवाने के लिए मेयर के विरुद्ध भी जाते हैं और आपस में झगड़ते भी हैं। ये पात्र आज की असंवेदनशील, आत्मकेंद्रित और स्वार्थ-तत्पर शासन-व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं।
7. **कलाविज्ञ**, जो रूप-सौंदर्य को ही महत्वपूर्ण समझता है और उसी को उपयोगी भी। यह पात्र कलाकारों के उस वर्ग की ओर संकेत करता है, जो कला के वास्तविक मर्म को नहीं समझते।
8. **ईश्वर और उसका देवदूत**, जो कहानी के वास्तविक उद्देश्य को हमारे समक्ष रखते हैं। यह उद्देश्य है— मनुष्य के दुख-दर्दों के प्रति समानुभूति की भावना और उसके लिए कर्मशील होने की ज़रूरत। लेखक कहना चाहता है कि वास्तविक सौंदर्य मनुष्यता की भावना और कर्मशीलता में निहित है।



### पाठगत प्रश्न-13.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:



टिप्पणी

### सुखी राजकुमार

1. निम्नलिखित में से मुहावरा कौन-सा है?

- |                        |                          |                    |                          |
|------------------------|--------------------------|--------------------|--------------------------|
| (क) बूँद टप-से गिरना   | <input type="checkbox"/> | (ख) विहार करना     | <input type="checkbox"/> |
| (ग) हाँ-में-हाँ मिलाना | <input type="checkbox"/> | (घ) मार से बच जाना | <input type="checkbox"/> |

2. 'मैं इसी जगह पर ठहरूँगी' अर्थ को ठीक तरह से व्यक्त करने वाला उपयुक्त वाक्य है-

- |                         |                          |                         |                          |
|-------------------------|--------------------------|-------------------------|--------------------------|
| (क) मैं यहाँ ठहरूँगी    | <input type="checkbox"/> | (ख) मैं यहाँ ही ठहरूँगी | <input type="checkbox"/> |
| (ग) मैं यहीं ही ठहरूँगी | <input type="checkbox"/> | (घ) मैं यहीं ठहरूँगी    | <input type="checkbox"/> |

3. मानवीय गुणों को मानवेतर प्राणियों द्वारा व्यक्त करने में है-

- |             |                          |             |                          |
|-------------|--------------------------|-------------|--------------------------|
| (क) चमत्कार | <input type="checkbox"/> | (ख) विषमता  | <input type="checkbox"/> |
| (ग) विसंगति | <input type="checkbox"/> | (घ) विडंबना | <input type="checkbox"/> |

### 13.2.5 भाषा-शैली

जैसा कि आप जान चुके हैं यह कहानी आयरिश लेखक ऑस्कर वाइल्ड द्वारा मूल रूप से अंग्रेजी भाषा में लिखी गई है। आप यह भी जान चुके हैं कि कहानी में घटना-स्थान और घटना-समय का उल्लेख न होने से यह कहानी किसी भी जगह और किसी भी वक्त की कहानी बन गई है। इसीलिए इस कहानी का अनुवाद करते हुए हिंदी के ख्यातिप्राप्त कवि-कथाकार-नाटककार-आलोचक-संपादक धर्मवीर भारती ने ऐसी भाषा-शैली का उपयोग किया है कि हमें यह कहानी अपने ही देश की और अपने ही समय की लगती है। उन्होंने अंग्रेजी के शब्द-प्रयोग, मुहावरों और विशिष्ट अभिव्यक्तियों को हिंदी भाषा और संस्कृति के अनुकूल ढाल दिया है। आइए कुछ पर ध्यान दें:

- (क) **शब्द-प्रयोग:** स्वर्ण पत्र, स्तंभासीन, टप-से, डबडबाना, ढुलकना, फड़फड़ाना, क्षत-विक्षत, नृत्य-वसन, अंग-लेपन, ढेले, तड़पना, फुदककर, ठंडक, सपनीली, कुंज, पुरोहित, रंगरलियाँ, छज्जा, गज़ब का, कलाविज्ञ, कूड़ेखाना, चहकना, विहार करना आदि।
- (ख) **मुहावरे:** हृदय फटा जाना, मोल आँकना, रंगरलियाँ मनाना, चेहरे लटकना, सूनी निगाहों से देखना, दिन करीब होना, हाँ-में-हाँ मिलाना आदि।
- (ग) **विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ:** पंखों में मुँह छिपाकर सोना, बूँद टप-से गिरना, आँखें डबडबाना, गाल पर आँसू ढुलकना, झपकी आना, दिन उगना, चाँद उगना, सपने टूटना, भोर का तारा डूबना, फूट-फूट कर रोना, खाली हाथ घर जाना, चेहरे पर गुलाबी किरणें झलक आना, ठंड से अकड़ना आदि।



(घ) वाक्य-विन्यास: मैं ठहरूँ कहाँ?/मैं यहीं ठहरूँगी/तुमने तो मुझे बिलकुल भिगो दिया/मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है/ लेकिन कोई बात नहीं, मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी/तो वह मार से बच जाएगी आदि।

इन वाक्यों में रेखांकित हिस्सों पर विशेष ध्यान दीजिए। आप इस पाठ में 'संवाद' और 'क्रियाकलाप' के अंतर्गत भी वाक्य-विन्यास पर ध्यान दे चुके हैं।

इस कहानी को पढ़ते समय कई जगह आपको लगा होगा कि कहानी की स्थितियाँ आपके सामने मानो सचमुच उपस्थित हो रही हैं। अर्थात्, इस कहानी में चित्रात्मकता की विशेषता मिलती है। लेखक ने यह चित्रात्मकता दो तरह से उपस्थित की है। 1. जहाँ वह स्थितियों अथवा व्यक्ति-विशेष की दशा को बताने के लिए ब्यौरे देता है। याद कीजिए कहानी की आरंभिक पंक्तियाँ या उस स्त्री का वर्णन, जिसकी उँगलियाँ सुई के घाव से क्षत-विक्षत हैं। टूटे-फूटे मकान में बुखार से तड़पता बच्चे का शब्द-चित्र तथा तरुण कलाकार का वर्णन भी इसके उदाहरण हैं। ब्यौरों के माध्यम से बनाए गए अन्य शब्द-चित्रों को आप भी ढूँढ़ सकते हैं। 2. ख़ास तरह के शब्दों के चुनाव से भी इस कहानी में चित्रात्मकता लाई गई है। टप-से, डबडबाना, दुलकना, फड़फड़ाना आदि शब्द ध्वनियों के माध्यम से चित्र उपस्थित करते हैं। ये ऐसे शब्द हैं, जिनका हम भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए अक्सर उपयोग करते हैं। अर्थात्, लेखक ने जानी-बूझी स्थितियों को पाठक के सामने प्रकट करने के लिए जानी-बूझी शब्दावली का उपयोग किया है।

आपने यह भी महसूस किया होगा कि इस कहानी में भाषा की मितव्ययिता मिलती है अर्थात् एक भी शब्द अनावश्यक नहीं है। शायद इसीलिए कहानी में लेखक अपनी ओर से बहुत कम टिप्पणी करता है। यह कहानी संवादों से या बातचीत की शैली से ही आगे बढ़ती है। इसके विषय में आप पहले ही विस्तार से पढ़ चुके हैं। कम शब्दों में अधिक व्यक्त करने के कारण इस कहानी में सांकेतिकता का गुण भी आ गया है। इसी से कहानी की भाषा चुस्त-दुरुस्त हो गयी है।

आपने पाठ में जो वाक्य पढ़े हैं, उनमें कुछ वाक्यों में एक ही क्रिया है और कुछ वाक्यों में एकाधिक क्रियाएँ हैं। इस आधार पर वाक्यों के दो भेद होते हैं- सरल वाक्य और जटिल वाक्य। सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है तथा ऐसे वाक्य से समापिका क्रिया होती है, जैसे- (i) मोहन जाता है, (ii) राम का बेटा मोहन जाता है, (iii) राम का बेटा मोहन स्कूल जाता है।

उक्त तीनों वाक्यों में समापिका क्रिया एक ही है, अतः ऐसे वाक्य सरल वाक्य कहलाते हैं। कुछ और उदाहरण देखिए: (i) 'नगर में ..... स्थापित थी।' (ii) 'लोग उस प्रतिमा की बड़ी प्रशंसा करते थे।' (iii) दिन भर उड़ने के बाद एक गौरैया रात को नगर के समीप पहुँची।

जटिल वाक्य दो तरह के होते हैं। एक संयुक्त वाक्य और दूसरे मिश्र वाक्य। संयुक्त वाक्य दो समानांतर वाक्यों से बना होता है तथा वह समुच्चयबोधक अव्ययों- और, तथा, एवं,



टिप्पणी

### सूखी राजकुमार

किंतु, परंतु आदि से जुड़ा होता है, जैसे- (i) पिता जी घर आए और चाचा जी चले गए। (ii) मैं बाजार गया और जलेबी लाया। (iii) या तो तुम इस काम को कर दो, वरना मुझे स्वयं करना पड़ेगा।

पाठ से कुछ उदाहरण और देखिए—

- (i) वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग-लेपन किया गया होगा।
- (ii) उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे।

मिश्र वाक्य भी दो या दो से अधिक वाक्यों से बना होता है, लेकिन उसमें एक उप वाक्य प्रधान होता है तथा दूसरा आश्रित उप वाक्य होता है, जैसे—

- (i) माँ ने कहा कि सोहन नहीं आएगा।
- (ii) जो लड़का मुझे मिला था, वही प्रथम आया है।
- (iii) जहाँ भी तुम जाओगे, मैं वहीं आ जाऊँगा।

### 13.2.6 उद्देश्य

इस कहानी को पढ़ने के बाद आप समझ चुके होंगे कि कहानी के माध्यम से लेखक हमसे क्या कहना चाहता है। जी हाँ, ठीक ही समझा आपने। इस कहानी में स्थान और समय का उल्लेख न करके कहानीकार ने उस हर जगह और हर वक्त की बात की है, जहाँ नगर धनी और निर्धन वर्ग में बँटे हैं और जहाँ राजनीतिज्ञ स्वार्थी, कलाविज्ञ रूप-सौंदर्य देखने वाले, आम लोग कीमत से चीजों का मूल्यांकन करने वाले, अभिजात और धनी लोग आत्मकेंद्रित और कर्मचारी लोग अपने मालिकों के अनुसार व्यवहार करने वाले हैं। ऐसे किसी भी स्थान पर व्यापक जनता गरीबी, बीमारी, भुखमरी और बदहाली की शिकार होती है और उनमें भी सबसे बदतर स्थिति बच्चों की होती है— उन बच्चों की, जो वहाँ का भविष्य हैं। यानी कथाकार बार-बार बच्चों का जिक्र करके ऐसी व्यवस्था के भविष्य की भयावहता को भी व्यक्त करता है।

कहानीकार इस विडंबना को मनुष्य के बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य से जोड़ता है। आमतौर पर देखने में सुंदर यानी रूपवान की और कीमती चीजों की प्रशंसा की जाती है, जबकि कहानीकार आंतरिक यानी मानवीय गुणों और कर्म के सौंदर्य को सराहने के लिए हमें प्रेरित करता है। कहानी के प्रारंभ में राजकुमार की प्रतिमा की सभी सराहना करते हैं, पर अंत में मेयर, सभासद और कलाविज्ञ उसे मटमैला और मनहूस समझकर वहाँ से हटाना चाहते हैं। लेकिन, गौरैया राजकुमार के कुरूप होने की प्रक्रिया में उसके कर्म-सौंदर्य को देखते हुए उससे और ज़्यादा प्रेम करने लगती है, यहाँ तक कि ठंड में प्राण त्याग देती है। ईश्वर द्वारा ऐसे राजकुमार और ऐसी गौरैया को स्वर्ग में स्थान दिलाकर कहानीकार एक विडंबना को उजागर करता है। वह विडंबना है— मानव-समाज में मानवीय गुणों की उपेक्षा का भाव। इसी विडंबना को इससे भी समझा जा सकता है कि पत्थर की मूर्ति,





जिसका दिल जस्ते का है, उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार है और इसको समझने वाला भी प्रायः उपेक्षित एक मानवेतर प्राणी यानी गौरैया है। इस विडंबना को अनेक प्रकार से उभारकर कहानीकार मनुष्य-समाज में व्याप्त संवेदनहीनता की स्थिति को तोड़ना चाहता है।



### आपने क्या सीखा

- जब हम अपने से बाहर देखते हैं, तो हमारे अनुभव हमें संवेदनशील बनाते हैं और समाज के हित में सक्रिय करते हैं।
- गौरैया के व्यक्तित्व-परिवर्तन से हमें पता लगता है कि अच्छे लोगों की संगत से व्यक्तित्व उदार और अधिक सामाजिक बनता है।
- समाज में धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों में बड़ी विषमता है। धनी वर्ग प्रायः आत्मकेंद्रित हो जाता है।
- कुछ लोगों तक धन, वैभव, और अधिकार सीमित होने के कारण व्यापक मनुष्य-समाज की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पातीं। इनके प्रति समानुभूति ही सच्ची मनुष्यता है।
- बाह्य सौंदर्य (रूप-सौंदर्य) से आंतरिक सौंदर्य (कर्म-सौंदर्य) अधिक महत्वपूर्ण है—वही हमें श्रेष्ठ मनुष्य बनाता है।
- कहानी में कथावस्तु और पात्रों का चरित्र-चित्रण वर्णन के द्वारा नहीं, बल्कि संवादों के ज़रिए किया गया है।
- कहानी की भाषा में चित्रात्मकता, सांकेतिकता और मितव्ययिता के गुण हैं।



### योग्यता-विस्तार

नाटककार, कवि और लेखक ऑस्कर वाइल्ड (1854-1900) का जन्म डबलिन आयरलैंड में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा डबलिन में हुई। उनकी माँ एक राजनीतिक लेखिका और पिता एक सफल नेत्र-चिकित्सक थे। जब ऑस्कर वाइल्ड किशोर ही थे, उनका परिवार लंदन चला गया, अतः उनकी आगे की शिक्षा ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में हुई। विश्वविद्यालय में उन्होंने कवि और लेखक के रूप में अपनी अलग पहचान बना ली। इस दौरान उनकी एक कविता पर उन्हें पुरस्कृत भी किया गया।



टिप्पणी

### सुखी राजकुमार

उनके लेखन की मुख्य विशेषता वाक्-चातुर्य और हास्य-व्यंग्य है। उन्होंने बच्चों के लिए कविताएँ, नाटक और कहानियाँ लिखीं, किंतु उनके नाटक अधिक लोकप्रिय हुए। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं :

कविताएँ (1881)- कविताएँ

सुखी राजकुमार और अन्य कहानियाँ (1888)- कहानियाँ

द पिक्चर ऑफ़ डोरियन ग्रे (1890)- उपन्यास

ए वूमेन ऑफ़ नो इम्पोर्टेंस (1893)- नाटक

द इम्पोर्टेंस ऑफ़ बीइंग अर्नेस्ट (1895)- नाटक

1893 में जब वे बच्चों के लिए परी-कथाएँ लिख रहे थे और 'वीमेन वर्ल्ड' नामक पत्रिका के संपादन में संलग्न थे, तब उन्होंने 'सुखी राजकुमार और अन्य कहानियाँ' लिखीं।



### पाठांत प्रश्न

1. राजकुमार के जीवन-काल और प्रतिमा बनने के बाद के राजकुमार के व्यक्तित्व की तुलना कीजिए और बताइए कि आपको कौन-सा रूप पसंद है और क्यों?
2. गौरैया के व्यक्तित्व में आने वाले परिवर्तन पर अपनी टिप्पणी लिखिए।
3. 'सुखी राजकुमार' कहानी में चित्रित नगर से अपने परिवेश की तुलना कीजिए।
4. 'सुखी राजकुमार' कहानी में बच्चों की स्थिति का मूल्यांकन कीजिए और स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव लिखिए।
5. 'सुखी राजकुमार' कहानी का सबसे मार्मिक स्थल कौन-सा है और क्यों?
6. 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवादों की विशेषताएँ लिखिए।
7. कहानी में विरोधी स्थितियों के वर्णन के पीछे कहानीकार का क्या उद्देश्य है? स्पष्ट कीजिए।
8. ईश्वर द्वारा राजकुमार और गौरैया को स्वर्ग में स्थान देने की बात से कहानीकार क्या संदेश देना चाहता है?
9. राजकुमार की आँख का नीलम पाकर तरुण कलाकार कहता है- "ओह, मालूम होता है, लोग मेरा मोल आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा



है।” यदि आप इस कलाकार से कुछ कह पाते, तो क्या कहते और क्यों? विस्तार से लिखिए।

10. सरल संयुक्त और मिश्र वाक्यों का एक-एक उदाहरण लिखिए।

टिप्पणी



### उत्तरमाला

#### पाठगत प्रश्न

13.1 1. (ख) 2. (क)

13.2 1. (घ), 2. (ख), 3. (घ)

13.3 1. (ग), 2. (घ), 3. (घ)